रात्रि क्लास 19-6-68 ओमशान्ति " सृष्टि चक्र याद है?

तुम हो सोनपुट। बच्चे भी समझते हैं हम बेहद के बाप के बच्चे हैं। बाप भी समझते हैं बेहद के बच्चे हैं। इन्हों को गोद में ले जाना है। बच्चे समझते हैं हम अभी आयरन एज में हैं फिरजाना है गोल्डेन एज में। समझते तो सभी हैं बाप बिगर कोई ले नहीं जावेंगे। लिखा हुआ भी है मामेकं याद करो। परन्तु समझते नहीं हैं। कृष्ण को तो कब बाप-टीचर गुरु कह न सके। बात बहुत सहज है सबने समझाने की। बाप बाप है तो जरूर वरसा देंगे ना। टीचर को सर्वव्यापी कैसे कहेंगे। सर्व को तो पढ़ा न सके। पढ़ाते उनको ही हैं जिनको कल्प पढ़ाया था। जो स्वर्ग के मालिक बनते हैं। बच्चों को बुधि में रहना है बाप हमको राजयोग सिखलाते हैं। हम बाबा के पास जाते हैं। बाप से स्वर्ग का वरसा मिलता है। और राजाई प्राप्त कराने पढ़ाते भी हैं। साथ भी ले जावेंगे। यह बच्चों को जरूर याद रहना है। बेहद के बाप के सिवाय और कोई को बाप टीचरगुरु नहीं कहा जा सकता। बाप सभी आत्माओं का बाप है। वह टीचर बन पढ़ाते भी हैं। यह एकआबजेक्ट है। यह बात बुधि में बिठाने से सर्वव्यापी की बात उड़ जावेंगी। कहते हैं ना सद्गुरु अकाल। सद्गुरु तो एक ही है। जो सद्गति देने वाला है। गुरुनानक भी सद्गति नहीं दे सकते। वह भी उनकी महिमा करते हैं। बाप को बुधि में सारा झाड़ का नालेज है। वैसे नालेज तुम बच्चों को भी बुधि में कायम रखना है। बच्चों के सिवाय और कोई को बुधि में नहीं हैं। इसलिए उनको पत्थर बुधि कहा जाता है। रचयिता और रचना का नालेज ही नहीं है। बाप समझाते हैं यह तमोप्रधान दुनिया है। इसमें दुःख है। अभी तुम समझते हो बाकी थोड़ा समय है। फिर 21 जन्म सुखी बन जावेंगे। तो वह खुशी रहती है। जितना जीयें उतना ही अच्छा। बाप से वरसा जास्ती लेवें। कर्मातीत अवस्था तो हुई नहीं हैं। बाबा कहते हैं ना। अशरीरी होकर जाना है। अनायास ही बैठे2 शरीर छोड़ कर आकर नया शरीर ले। वह लोग आजकल हार्ट को बदलते हैं। तुम शरीर को बदलते हो तो दुनिया को भी बदलते हो। अच्छा मीठे2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडनाईट। रूहानी बच्चों को नमस्ते।

रात्रि क्लास 21-6-68 :- बहुत ही आते रहेंगे। कोटों में कोई ही निकलेंगे। पहले 10 फिर 100 फिर हजार फिर 10 हजार ऐसे वृधि होती रहेगी। पत्थरों को पारस बनाना है। भक्ति मार्ग में तो कुछ भी मिलता नहीं है भक्तों को पता ही नहीं। कितनी महिमा होती है अनेक भाषाओं में। कुछ भी नहीं मिलता। भल सा० होती है। देवियों को बल चढ़ाते हैं। भक्ति और ज्ञान में रात दिन का फर्क है। भक्तों को कुछ पता ही नहीं है। क्या क्या करते हैं। ड्रामा अनुसार पेट भरता है बड़े शाहुकार बन जाते हैं। जिनके पासपैसे रहेंगे उनका क्या होगा। सभी खत्म होते जावेंगे। बच्चों ने ब्रह्मभक्ति और ज्ञान का राज़ समझा है अच्छी तरह से। कितने वेद शास्त्र पढ़ते हैं। बच्चे जानते हैं बाबा हमारा सुप्रीम टीचर है। बड़ा इम्तहान पढ़ाते हैं। इससे बड़ी पढ़ाई होती नहीं है। फिर भी बहुत हैं पढ़ाई नहीं पढ़ते हैं। मुरली नहीं मंगाते हैं। भगवान पढ़ाते हैं तो ऐसे टीचर को पढ़ाई पढ़नी चाहिए ना। बाप को भी याद करना है। पढ़ना है नहीं तो मुफ्त बहुत घाटा डालेंगे। पढ़ाई में रेस तो होती है ना। बाप मेहनत तो देते हैं नहीं हैं। बाप कहते हैं मैं गुहयते गहुय पायन्टस देता हूं। बच्चों को समझना चाहिए। ड्रामा अनुसार टाईम अनुसार भक्ति में बेस्ट गया। कितने हैं योग आदि कठिन तपस्या करते हैं। फायदा कुछ नहीं है। कितना अपना नाम करते हैं। करप्शन एडल्टरेशन। एक भी मनुष्य नहीं जो ठगी नहीं करता हो। भारत का राजयोग नामी है। यह तो किसको पता नहीं है। कि ब्रह्मा कुमारियां ही ब्राह्मण बन सो फिर देवता बनते हैं। ब्रह्मा भी पढ़ते हैं। यह सभी बातें शास्त्रों में है नहीं। शास्त्र तो है मनुष्य के बनाई हुई। तुम लिख भीसकते हो बहुत गालियां देते हैं सर्वव्यापी कहते हैं, बड़ा डिफेम करते हैं। तुम्हारे पास बवर्नर भी कहता था भगवान सर्वव्यापी है। इनको भी तुम कह सकते हो आप बाप को सर्वव्यापी कह गाली देते हो। बाप ने तो कहा है हियर नो ईवील सी नो ईवील। यह सभी पशु पत्थर बुधि है। डरना न है। तुम इनसल्ट थोड़े ही करते हो। वह तुम्हारे बाप की इनसल्ट करते हैं। भगवानुवाच ऐसे अधमियों

का विनाश करता हूं। सर्वव्यापी कहने वालों को तो फट से बोलो। विल पावर इसको कहा जाता है। वह पावर नहीं है तो वह उछल निकलती नहीं है। बेहद के बाप को तुम गालियां देते हो। ठिक्कर भितर में ठोक देते हैं। हम ब्राह्मण सारे गवर्मेन्ट परभी केस करेंगे। वह है कौरव गवर्मेन्ट, यह है पाण्डव गवर्मेन्ट। इतनी ग्लानी करते हैं। इसलिए विनाश काले विप्रीत बुध्द बिनश्यन्ति। जो प्रीत रखते हैं वह विजयन्ति। हम बाप से वरसा लेते हैं। तुम गाली देते हो तो तुम्हारा विनाश तो जरूर होना चाहिए। योग युक्त हो युक्ति से ऐसा कहना चाहिए जो उनको गुसा न आवे। भगवानुवाचः है ना मेरी ग्लानी करते हैं। सब से अधर्मी तो वह ठहरे जो मेरी ग्लानी करते हैं। यह गीता का युग है ना। पुरानी दुनिया का विनाश नई दुनिया का स्थापना यह तो बाप का ही काम है। बाप आकर उपकार करते हैं खुद तो विश्व का मालिक नहीं बनते। बच्चों को बनाते हैं। फिर जयजयकार हो जाता है। गाली देने वाले का विनाश जरूर होना है। हायहायकार करते मरेंगे। भगवानुवाचः है ना। बहुत बच्चे माया से हार खाते हैं। पढ़ाई छोड़ देते हैं। यह भी नई बात नहीं। अनेक बार हुआ है। यह ड्रामा का चक्र है। फिर यह ज्ञान सतयुग में नहीं होता। अभी तुमको मिल रहा है। फिर तुम हरावेंगे। कितना बार हराया और जीता होगा। कितनी सहज समझने की है। भक्तों में ज्ञान नहीं है तो भक्ति में जैसे सड़ते हैं। बाप कहते हैं बहुत जन्मों के वस्त्र हैं सड़ गये हैं। अभी घर जाना है। जाने लिए ही तो तरफ रहे हैं। एक्युरेट कर्मातीत अवस्था को पाकर फिर जाना है। जल्दी नहीं जाना है। बाबा अभी ही पढ़ाते हैं तो फिर कल्प बाद भी पढ़ावेंगे। बेहद का बाप बेहद का नालेज बैठ समझाते हैं। बाप कहते हैं पढ़ाई को छोड़ो नहीं। कहां भी तुम मुरली मंगा सकते हो परन्तु बाबा पर इतना लव नहीं है। स्त्री पुरुष का कितना लव होता है। यह तो बाप डबल सिरताज बनाते हैं। ऐसे बाप के पास कितना जल्दी2 रिफ्रेश होने आना चाहिए। बाबा बाबा है टीचर है सर्वव्यापी फिर कैसे हो सकता। यह है गाली। बाबा ने समझाया है तुम कैसे भी कर सकते हो। एक की बाबा वायोग्राफी में दूसरे का नाम डालना .... तुम सिर्फ योग में तीखे हो फिर देखना कितना नशा आता है। राजे-रजवाड़े आदि सभी तुम्हारे पास आवेंगे। परन्तु अभी नहीं। रीवलेशन हो जाये। तुम पर कलंक लगते हैं कलंकीधर बनने लिए। यह सारा खेल बना हुआ है। जो बाप बैठ समझाते हैं। नम्बरवार तो है ही। महारथी घोड़ेसवार प्यादे हैं। यह राजधानी स्थापन होती है। तुम्हारा अविनाशी पार्ट है। तुम कब थकते नहीं हो। अभी तुम जानते हो इस चक्र को हम जानते हैं। कितना वन्डर फुल खेल है। रचयिता और रचना के आदि मध्य अन्त को जान कितनी खुशी होती है। अन्दर में आना चाहिए हम यह शरीर छोड़ कर जाकर प्रिन्स बनेंगे। नया पार्ट बजावेंगे। यह खुशी होनी चाहिए। अगर याद में रहते हो तो। नहीं तो तब खुशी नहीं रहती। अच्छा बच्चों को गुडनाईट।

पायन्टस :- बाप मूल बात बच्चों को यही समझाते हैं अपने को आत्मा समझ देही अभिमानी बनो और बाप को याद करो तो पाप कटे। बिगर याद के पाप कटते नहीं और बढ़ते हैं। गंगा स्नान से कोई पाप कट न सके। उसमें तो सारा किचड़ा पड़ता है। उनको फिर तीर्थ समझ स्नान करते हैं। परन्तु उन से कोई पावन तो हो न सके। सर्व का सदगति दाता एक ही बाप है। बाप तुम बच्चों को कहते हैं मुझे भी यहां आना पड़ता है। शरीर भी मैं वहलेता हूं जो अपने जन्मों को नहीं जानते हैं। बहुत जन्मों के अन्त का जन्म किसका होगा। ल०ना० ही पहले नम्बर थे। जो फिर 84 जन्म ले यह बने हैं। वह नाम रूप तो नहीं है भिन्न नाम रूप चला आता है। फिर पिछाड़ी में आकर सांवरा बनी है। आत्मा ही गोरी और सांवरी बनती है। आत्मा पतित तो शरीर भी ऐसा मिलता है। बाप फिर ज्ञान चिता पर चढ़ाते हैं। तो तुम गोरा बन जाते हो। ज्ञान देते हैं ज्ञान सागर निराकार बाप। भक्ति मार्ग में तो माया टैक्स2 पैसे खर्च करते2 अभी बिल्कुल ही कंगाल बन पड़े हैं। जब कौड़ी लायक बनते हैं तो फिर बाप आकर हीरे लायक बनाते हैं। अभी बाप कहते हैं अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। जो सब आत्माओं का बाप है। उनको फिर भितर में मिला देते हैं। अच्छा ॐ शांति।